# रॉबर्ट वानॉय , व्यवस्थाविवरण व्याख्यान 15

© 2011 डॉ. रॉबर्ट वानॉय , डॉ. पेरी फिलिप्स, टेड हिल्डेब्रांट

## वेदियां, सारांश [अंतिम व्याख्यान]

1. बिना कटे पत्थर की वेदियाँ: निर्गमन 20:24-26

वेदियों के निर्माण के लिए केवल मिट्टी और बिना कटे पत्थर ही क्यों? क्या वह केवल जंगल के लिए था? होबार्ट बताते हैं कि यह निष्कर्ष निकालना उचित नहीं है कि यह केवल जंगल का संदर्भ है; यह कनान में प्रवेश के बाद के समय के लिए था। यह उस प्रकार की वेदी थी जिसका उपयोग किया जाना था। वास्तव में, वेदी के लिए निर्देश निर्गमन 20 में माउंट सिनाई पर दिए गए थे; जंगल में 40 वर्षों के उस बिंदु पर कोई विचार नहीं है। सुनहरे बछड़े का धर्मत्याग नहीं हुआ था; कानून अभी सिनाई में दिया गया था। प्रत्याशा यह है कि इज़राइल जल्द ही वादा भूमि में आएगा। निर्गमन 20 परिच्छेद में इस बात पर कड़े नियम थे कि वेदी कैसे बनाई जानी थी, वह स्थान कहाँ स्थित था, जिसे लोगों की मनमानी पसंद से हटा दिया गया था। ध्यान दें कि यह कहता है "कि उन सभी स्थानों पर जहां मैं अपना नाम दर्ज करूंगा, मैं आपके पास आऊंगा।" तो नियम इस पर थे कि इसे कैसे बनाया जाना था और इसे किस स्थान पर स्थित किया जाना था, लेकिन यह कोई संकेत नहीं देता है कि केवल एक ही स्थान का उपयोग किया जाना था। निश्चित रूप से यह स्पष्ट है कि शमूएल के समय की प्रथा उस कानून के अनुरूप थी, और एक से अधिक वेदी थीं। तो हलवर्डा प्रश्न पूछता है: फिर हम निर्गमन 20 और व्यवस्थाविवरण 12 में कैसे सामंजस्य स्थापित करें? क्या हम कानूनों और निष्कर्षों को अपनाते हैं, या यह विकास की एक लंबी अवधि है - मूल रूप से वेदियों की बहुलता के साथ एक ही वेदी के केंद्रीकरण में विकसित होना। क्या व्यवस्थाविवरण 12 केंद्रीकरण की मांग करता है?

2. व्यवस्थाविवरण 12:14

अतः अध्याय 12, श्लोक 14 की चर्चा वास्तव में एक आलोचनात्मक श्लोक बन जाती है। आप श्लोक 14 में पढ़ते हैं, इसकी प्रस्तावना श्लोक 13 से करते हैं: “सावधान रहो कि तुम अपनी होमबलि कहीं भी इच्छानुसार न चढ़ाओ। उन्हें केवल उसी स्थान पर चढ़ाना जो यहोवा तुम्हारे गोत्रों में से किसी एक में चुन लेगा, और वहीं सब कुछ मानना जो मैं तुम्हें आज्ञा देता हूं। "हर जगह नहीं, बल्कि तुम्हारे गोत्रों में से एक जगह पर।" हलवर्डा का कहना है कि आप "अपनी जनजातियों में से एक" वाक्यांश में पहली छाप से नहीं रुक सकते। (व्यवस्थाविवरण 12:14) हिब्रू उपयोग के अनुसार, यह आवश्यक रूप से केवल एक को इंगित नहीं करता है क्योंकि अक्सर इस प्रकार की अभिव्यक्ति का अंग्रेजी शब्द "कोई भी," - "आपके किसी भी जनजाति में" के समान विचार हो सकता है। ताकि इसका अर्थ "आपके किसी एक गोत्र में" या "आपके किसी भी गोत्र में" हो सके। यह स्पष्ट रूप से स्पष्ट नहीं है.

3. व्यवस्थाविवरण 18:6 लेवी  अब आ रहे हैं, हलवर्डा जो इंगित करते हैं वह व्यवस्थाविवरण 18:6 के साथ सादृश्य है। व्यवस्थाविवरण 18:6 में , आपके पास नियम है, "यदि कोई लेवी आता है," और ध्यान दें कि राजा जेम्स इस भाग का अनुवाद करता है: " और यदि कोई लेवी तेरे किसी फाटक से सारे इस्राएल में से, जहां वह रहता था, आता है, और साथ आता है वह अपने मन की सारी अभिलाषाओं को उस स्यान पर ले जाए जिसे यहोवा चुन लेगा, और वह अपने परमेश्वर यहोवा के नाम से सेवा टहल करेगा, जैसा उसके सब लेवीय भाई वहां यहोवा के साम्हने खड़े रहते हैं। ” अब, हिब्रू में अभिव्यक्ति वास्तव में समान है, लेकिन अंतर हिब्रू शब्द *' एहद' की बहस में है*: " तुम्हारे द्वारों में से *एक से" या "तुम्हारे किसी* द्वार से।" परन्तु मुद्दा यह है कि यह नियम *किसी एक* विशेष द्वार से आने वाले लेवी के लिए नहीं है, बल्कि *किसी भी* द्वार से आने वाले *प्रत्येक* लेवी के लिए है। “यदि कोई लेवी आए, तो तेरे किसी फाटक से कोई लेवी भी आए।” इसलिए अभिव्यक्ति का स्पष्ट रूप से अनुवाद "किसी एक से" या "किसी से भी" किया जा सकता है। यह काफी हद तक उस संदर्भ पर निर्भर करता है जिसमें इसे रखा गया है।

4. व्यवस्थाविवरण 12:14: संख्या 16:7 [कोरह विद्रोह], विलक्षणता?

लेकिन फिर आप ध्यान दें, व्यवस्थाविवरण 12:14 पर वापस लौटते हुए, यह कहता है, "उस स्थान पर।" क्या वह एकवचन में नहीं है? यदि एक से अधिक स्थानों का अभिप्राय है तो क्या बहुवचन की आवश्यकता नहीं होगी, "उन स्थानों में जिन्हें प्रभु चुनेंगे"? लेकिन फिर, जरूरी नहीं; ऐसा हो सकता है, लेकिन जरूरी नहीं कि ऐसा हो। गिनती 16:7 में, आप जंगल में कोरह, दातान और अबीराम के साथ विद्रोह के संबंध में पढ़ते हैं : "सब से धूपदान ले लो, और कल उनमें यहोवा के साम्हने धूप डालना, और ऐसा होगा।" जिस मनुष्य को यहोवा इस प्रकार चुन ले वह पवित्र ठहरे। हे लेवी के पुत्रों, तुम अपने ऊपर बहुत अधिक अधिकार रखते हो" इत्यादि। अब मुद्दा यह है: "वह व्यक्ति जिसे प्रभु इस प्रकार चुनता है।" वाक्यांश वहां समान है: "आदमी" एकवचन है, लेकिन सवाल यह है कि क्या मूसा और हारून से बने पुजारी और नेताओं के कार्यालय को 250 तक बढ़ाया जा सकता है। इसमें 250 लोग शामिल हैं। तो चुनाव दो बहुवचनों के बीच है, लेकिन पाठ कहता है "आदमी," एकवचन। संख्याओं के संदर्भ में अर्थ स्पष्ट है: "आदमी" का प्रयोग किया जाता है चाहे दो आदमी हों या 250 आदमी हों। यह कह रहा है, "वह आदमी जिसे भगवान चुनेंगे," लेकिन जरूरी नहीं, या विशेष रूप से, केवल *एक ही* आदमी। यह या तो मूसा और हारून हैं या ये 250 लोग हैं जो मूसा और हारून के समान पद संभाल रहे थे। यह "वह आदमी होगा जिसे प्रभु चुनेंगे," लेकिन एक से अधिक के अर्थ में; ये वे लोग हैं जिन्हें नेता बनना है।

अब, मुझे लगता है कि व्याख्यात्मक रूप से आपको अध्याय में ही अभिव्यक्ति के आधार पर यह निष्कर्ष निकालना होगा कि व्यवस्थाविवरण 12 का अर्थ एक स्थान और एक जनजाति, या एक से अधिक स्थान हो सकता है, लेकिन भगवान किसी भी जनजाति में इसका संकेत देंगे। इसका अर्थ भाषा प्रयोग के आधार पर या तो हो सकता है। तो यह वास्तव में व्यवस्थाविवरण 12 निर्गमन 20:24 के समान ही कहता है : "उन सभी स्थानों में जहां मैं अपना नाम दर्ज करूंगा, मैं तुम्हारे पास आऊंगा और तुम्हें आशीर्वाद दूंगा।" प्रश्न एक या अधिक का नहीं है, बल्कि यह है कि क्या स्थानों का चयन मानवीय, मनमाने तरीकों से या दैवीय पसंद से किया जाता है। यह मनुष्यों द्वारा चुने गए "हर स्थान" में नहीं है, बल्कि भगवान द्वारा चुने गए "स्थान" में है। क्या वह बहुलता बनाम केंद्रीकरण है -

नहीं। प्रश्न एक या अधिक का नहीं है, बल्कि स्थानों का चयन कैसे किया जाता है: मानवीय मनमाने तरीकों से या दैवीय पसंद से? यही तो बात है। और उस बिंदु पर निर्गमन और व्यवस्थाविवरण के बीच एकरूपता है।

5. व्यवस्थाविवरण 12:18 संपूर्ण पारिवारिक यात्रा उनका यह भी कहना है कि निर्गमन 20 की विशिष्टताओं के पीछे का उद्देश्य ठीक उसी प्रकार की वेदी के विरुद्ध निषेध है जो कनान में मौजूद थी। अन्यजातियों कनानियों की तुलना में इस्राएल के पास एक विशिष्ट प्रकार की वेदी होनी थी। उनकी पूजा को कनानी पूजा के साथ भ्रमित नहीं किया जाना चाहिए। लेकिन निर्गमन में विनियमन का उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि इस्राएल की वेदी कनानियों की वेदियों से विशिष्ट रूप से भिन्न होनी चाहिए।

वह यह भी कहता है कि व्यवस्थाविवरण 12 कहता है कि सभी भेंटों को चुने हुए स्थान, या स्थानों पर लाया जाना चाहिए, और फिर यह जोड़ा जाता है कि पूरा परिवार सेवकों और लेवियों के साथ उपस्थित होगा। व्यवस्थाविवरण 12 का श्लोक 18: "अब तुम्हें अपने परमेश्वर यहोवा के सामने उस स्थान पर खड़ा होना चाहिए जिसे तुम्हारा परमेश्वर चुनेगा: तू, तेरा बेटा, तेरी बेटी, तेरा दास, तेरी दासी, और वह लेवी जो तेरे फाटक के भीतर था।"

अब वह जो बताता है वह यह है कि सेवकों और लेवियों सहित यह पूरा परिवार है। सोचिए कि यरूशलेम से 150 किमी दूर गलील के उत्तर में डैन जैसे शहर के लिए इसका व्यावहारिक रूप से क्या मतलब है। वर्ष में कम से कम तीन बार फसल के चरम पर, स्वतंत्र इच्छा भेंट और अन्य आवश्यक भेंट चढ़ाते हैं। पूरे परिवार को जेरूसा लेम की यात्रा करनी थी। अब हलवर्डा ने अपने लेख में चर्चा की है कि यूरोपीय संदर्भ में इसका क्या अर्थ होगा। यह मोटे तौर पर न्यूनतम, एक सप्ताह की अनुपस्थिति होगी। यह वैसा ही होगा जैसे हम आज इन आवश्यक पेशकशों को करने के लिए फ्लोरिडा, या कुछ और, या शायद दूर जा रहे हैं। लेवियों के बारे में क्या? विचार करें कि क्या गाँव में कई परिवार थे। एक लेवी पूरे वर्ष सड़क पर रहेगा।

6. एकल अभयारण्य लेकिन वेदियों की बहुलता तब हलवर्डा कहते हैं, "यदि आप एक उत्तरी शहर से लेवी होते तो यरूशलेम में क्यों नहीं रहते और जब वे आते हैं तो उनसे क्यों नहीं मिलते?" उनका कहना है कि यज्ञ का एक ही स्थान होना अव्यावहारिक है; इसे क्रियान्वित नहीं किया जा सका. उनका निष्कर्ष यह है कि इज़राइल के पास कभी भी ऐसा कानून नहीं था जो पंथ को एक स्थान पर बांधता हो। बल्कि, वे हमेशा एक ऐसे कानून के तहत रहते थे जो स्थानीय स्थानों के साथ-साथ एक केंद्रीय अभयारण्य का भी प्रावधान करता था - मूल रूप से शिलो में, बाद में यरूशलेम में। इसका मतलब यह नहीं है कि वहां कोई केंद्रीय अभयारण्य नहीं था और सन्दूक और मंदिर से जुड़े अभयारण्य की प्रधानता नहीं थी, लेकिन यह अभयारण्य को छोड़कर किसी अन्य वेदी पर किसी भी भेंट की विशिष्टता या अवैधता के बिंदु पर नहीं था।

7. वेदियों का स्थान इसलिए उन्होंने कहा कि जो विनियमित किया गया था वह वह स्थान था जहां वेदियां बनाई जानी थीं: न केवल मनमाने ढंग से कहीं, बल्कि वे स्थान जिन्हें भगवान ने कुछ हद तक स्पष्ट किया था। कैसे? थियोफनी या जो कुछ भी स्पष्ट रूप से वर्णित नहीं है, लेकिन यह उन स्थानों तक ही सीमित है जिन्हें भगवान ने संकेत दिया है। जिन सामग्रियों से वेदियाँ बनाई जानी थीं, उन्हें विनियमित किया जाना था, और जो चढ़ावा लाया जाना था, उसे विनियमित किया जाना था। इसलिए भगवान ने विभिन्न इलाकों में बिखरी हुई वेदियों की व्यवस्था की, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि हर गांव या हर कुछ मील पर एक वेदी है - बस हर जगह मनमाने ढंग से - क्योंकि व्यवस्थाविवरण 12:21 में यह कहा गया है: "यदि वह स्थान जो प्रभु तेरे परमेश्वर ने अपना नाम वहां रखना चाहा है जो तुझ से दूर है, तब तू अपके गाय-बैल और भेड़-बकरियोंमें से जो यहोवा ने तुझे दिया और आज्ञा दी है उसको मार डालना, और अपके फाटक में जो कुछ तेरा मन चाहे वही खा लेना। दूसरे शब्दों में, जानवरों को मारने के लिए अभयारण्य में जाने के अलावा अन्य स्थानों पर जानवरों को मारा या खाया जा सकता है। दूरी उसे अव्यवहारिक बना सकती है। तो ऐसा लगता है कि वेदियाँ पूरे देश में कहीं भी नहीं थीं, भगवान द्वारा कुछ स्थानों के निर्धारण के संबंध में कुछ प्रतिबंध थे, लेकिन एक केंद्रीय अभयारण्य तक सीमित नहीं थे और अन्य सभी वेदियाँ अवैध थीं।

इसलिए भगवान ने अपने सभी लोगों को उनके चारों ओर कनानी पूजा के प्रलोभन से बचाने के लिए और उन्हें बलि प्रणाली में प्रावधान के अनुसार संगति में रखने के लिए कई वेदियां प्रदान कीं, जो कि भगवान ने चरम के कारण उस प्रणाली का पालन करना लगभग असंभव बनाए बिना बनाया था। दूरियाँ.

8. मैनली का निष्कर्ष : वेदियों की संख्या नहीं बल्कि उनका चरित्र

मूलतः, यह हलवर्डा का दृष्टिकोण है। मैं कहूंगा कि जब हम थॉम्पसन की टिप्पणी और उनका परिचय पढ़ते हैं तो आपको लगभग वही स्थिति मिलती है। यदि आप भी बिल्कुल वैसा ही दृष्टिकोण देखना चाहते हैं, तो मैनली , *द बुक ऑफ द लॉ है* जिसे मैंने स्नातक छात्रों को पढ़ने के लिए कहा है। मैनली के पास इस पर एक पूरा अध्याय है और मूल रूप से वह एक ही निष्कर्ष पर पहुंचते हैं। वह कहते हैं, "केंद्रीकरण भाषा का उपयोग इस व्याख्या को पढ़ने या उसमें शामिल करने में सक्षम है। व्यवस्थाविवरण 12 के संदर्भ में वास्तविक फोकस कई यहोवा वेदियों और एक के बीच नहीं है, बल्कि कनानियों और अन्य देवताओं के बीच है जिनका नाम नष्ट किया जाना है और उस स्थान और उस स्थान का नाम जहां यहोवा निवास करेगा। सवाल उनकी संख्या पर नहीं बल्कि उनके चरित्र पर है. "चाहे शब्दों को एक केंद्र के अनुसार पढ़ा जाए या एक से अधिक के अनुसार, वे विधिवत अधिकृत अन्य वेदियों की संभावना को बाहर नहीं करते हैं। व्यवस्थाविवरण 16:21, 22 उनके अस्तित्व पर विचार करता है , और व्यवस्थाविवरण 27 में एक के निर्माण का आदेश दिया गया है। अतः यह वेदियों की बहुलता नहीं है जिसके विरुद्ध व्यवस्थाविवरण में तर्क दिया गया है।

एक अन्य पुस्तक एचएम सेगल , *द पेंटाटेच: इट्स कंपोजिशन एंड ऑथरशिप है।* इसमें पूजा के केंद्रीकरण पर एक अध्याय है, पृष्ठ 87 और निम्नलिखित। मैं उसे पढ़ सकता था, लेकिन मुझे लगता है कि हमारा समय लगभग ख़त्म हो गया है, और फिर से मूलतः वही निष्कर्ष है। मैनली, थॉम्पसन, सेगल का आम तौर पर विचार है कि यरूशलेम में ड्यूटेरोनोमिक विधान द्वारा वेदियों की बहुलता को बाहर नहीं रखा गया था।

9. पाठ्यक्रम सारांश - 3 क्षेत्र: संरचना और अखंडता (संधि), पूजा का केंद्रीकरण, और कानून संहिताओं का अनुक्रम अब मुझे ऐसा लगता है जैसे हम इस पूरे परिचयात्मक खंड को इस निष्कर्ष पर पहुंचाते हैं कि ड्यूटेरोनोमिक अध्ययन में तीन मुद्दे हैं वे महत्वपूर्ण हैं जिन पर वर्तमान में आलोचनात्मक सिद्धांत का एक बहुत ही ठोस रूढ़िवादी समकक्ष मौजूद है। पहली पुस्तक की यह पूरी संरचना है, और क्लाइन के काम और संधि/संविदा सादृश्य वाले अन्य लोगों ने आलोचनात्मक सिद्धांत के मुकाबले ड्यूटेरोनॉमी की पुस्तक की अखंडता और एकता का समर्थन करते हुए एक अच्छा तर्क दिया है।

दूसरा मुद्दा केंद्रीकरण पूजा का मामला है, जो वेलहाउज़ेन के दृष्टिकोण के लिए महत्वपूर्ण है। मुझे लगता है कि हलवर्डा , थॉम्पसन, मैनली और अन्य
की स्थिति उस मुद्दे का सामना करती है और इस मुद्दे को वेलहाउज़ेन की तुलना में काफी अलग परिप्रेक्ष्य में रखते हुए एक वैकल्पिक स्थिति देती है। तीसरा मामला, और मैं इसमें शामिल नहीं हो सकता क्योंकि यह जटिल और विस्तृत है, जे कोड, ई कोड, ड्यूटेरोनॉमी कोड, पवित्रता और पुरोहित कोड के माध्यम से वेदियों की इस तथाकथित प्रगति का मामला है। दूसरे शब्दों में, किसी प्रकार की ऐतिहासिक प्रगति में समानांतर विकास और परिवर्तन का क्रम। मैनली ने इस पुस्तक *द बुक ऑफ़ द लॉ: स्टडीज़ इन द डेट ऑफ़ ड्यूटेरोनॉमी* में इसका ख़ूबसूरती से वर्णन किया है । वह जेईडीपी की प्रगतिशील विकास योजना और क्रमिक कोड के साथ कई समस्याओं की ओर इशारा करते हैं। इसके लिए विशिष्ट कानूनों पर विस्तृत विचार की आवश्यकता है जो व्यवस्थाविवरण में वाचा संहिता के विपरीत हैं और उससे जो निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं। इसके बारे में मैनली की चर्चा वेलहाउज़ेन का मुकाबला करने के लिए एक उत्कृष्ट प्रतिक्रिया है।

तो उन तीन क्षेत्रों में, संरचना और अखंडता, पूजा का केंद्रीकरण, और कोड का अनुक्रम, पिछले कुछ वर्षों में एक इंजील परिप्रेक्ष्य से भारी मात्रा में काम किया गया है जो मुझे लगता है कि उन पदों का मुकाबला करने के लिए बहुत महत्वपूर्ण है बस व्यवस्थाविवरण की पुस्तक के अध्ययन में क्षेत्र पर हावी हो गया। अगली कक्षा में हम व्यवस्थाविवरण अध्याय 4 से 30 पर छात्रों की प्रस्तुतियाँ देंगे।

कोनिलिया विलियम्स और टेड हिल्डेब्रांट
द्वारा लिखित टेड हिल्डेब्रांट द्वारा रफ संपादित
डॉ. पेरी फिलिप्स द्वारा अंतिम संपादन
डॉ. पेरी फिलिप्स द्वारा पुनः सुनाया गया